यूपी की सियासत: समाजवादी पार्टी और मुसलमानों का पेचीदा रिश्ता

विचारक: डॉ सैयद नासिर शाह

उत्तर प्रदेश की सियासत में समाजवादी पार्टी (SP) और मुसलमान कम्युनिटी का रिश्ता पिछले तीन दहाइयों (decades) से काफी गहरा और पेचीदा (complex) रहा है। सियासी माहिरों और विश्लेषकों के मुताबिक, इस रिश्ते में जहां एक तरफ सियासी तहफ़्फ़ुज़ (political security) का एहसास रहा है, वहीं दूसरी तरफ सोशियो-इकोनॉमिक तरक्की की कमी और “वोट बैंक” बन कर रह जाने का दर्द भी झलकता है।

नेता जी (मुलायम सिंह यादव) के दौर से लेकर अखिलेश यादव की मौजूदा क़यादत (leadership) तक, इस सियासी सफर का एक निष्पक्ष (neutral) तज़िजया यहाँ पेश किया गया है।

नेता जी (मुलायम सिंह यादव) का दौर: फायदा और नुकसान

मुलायम सिंह यादव ने 1990 के दशक में 'M-Y' (मुस्लिम-यादव) समीकरण (equation) की बुनियाद रखी थी। उनके दौर को मुसलमानों के नज़रिए से फायदे और नुकसान, दोनों पैमानों पर देखा जाता है।

मुसलमानों के फायदे (Perceived Benefits):

* **सियासी तहफ़्फ़ुज़ (Political Security):** 1990 के दशक में राम जन्मभूमि मूवमेंट के दौरान मुलायम सिंह यादव ने जो सख्त फैसले लिए, उसने उन्हें मुसलमानों के दरमियान एक "प्रोटेक्टर" की छवि दी। उन्हें "मौलाना मुलायम" तक कहा गया।

* **सियासी हिस्सेदारी (Political Representation):** SP ने मुसलमानों को टिकट देने और सरकार बनने पर अहम मंत्रालय (ministries) देने में हमेशा आगे रखा, जिससे कम्युनिटी को सियासत में आवाज़ मिली।

नुकसान और तनक़ीद (Perceived Drawbacks):

* सिर्फ 'वोट बैंक' की हैसियत: बहुत से सामाजिक कार्यकर्ता (social activists) और एनालिस्ट्स मानते हैं कि नेता जी के दौर में मुसलमानों का इस्तेमाल ज़्यादातर वोट बैंक के तौर पर हुआ।

* **बुनियादी मसाइल पर नाकामी:** सच्चर कमेटी जैसी रिपोर्ट्स ने ज़ाहिर किया कि UP में मुसलमानों की तालीमी (educational) और मआशी (economic) हालत बहुत पिछड़ी हुई थी।

सियासी हिमायत के बावजूद, सरकारी नौकरियों और तालीम में इनका हिस्सा इनकी आबादी के मुतनासिब (proportionate) नहीं रहा।

* **पोलराइज़ेशन का असर:** SP के ओपनली मुसलमान-सेंट्रिक अप्रोच ने दूसरी तरफ रिवर्स-पोलराइज़ेशन को जन्म दिया, जिसका खामियाज़ा आगे चलकर कम्युनिटी को भुगतना पड़ा।

अखिलेश यादव का रवैया और बदलती सियासत

अखिलेश यादव जब SP की क़यादत संभालने आए, तो उनका पॉलिटिकल अप्रोच अपने वालिद (father) से थोड़ा अलग था। उन्होंने "डेवलपमेंट" (विकास) को अपना मेन एजेंडा बनाया, लेकिन मुसलमानों के हवाले से उनके रवैये पर अक्सर बहस होती है।

* **सॉफ्ट हिंदुत्व की तरफ झुकाव:** सियासी माहिरों का मानना है कि अखिलेश यादव इस बात से बख़ूबी वाकिफ़ हैं कि आज की सियासत में मेजॉरिटी वोट को नाराज़ करके चुनाव नहीं जीता जा सकता। इसलिए, वो खुद को सिर्फ मुसलमानों की पार्टी के तौर पर पेश करने से बचते हैं।

* **ख़ामोशी और मोहतात रवैया (Cautious Approach):** बहुत से मुसलमान यह महसूस करते हैं कि जब उनके ख़िलाफ़ कोई बड़ा मसला उठता है (जैसे CAA-NRC प्रोटेस्ट्स, मदरसों का सर्वे, या बुलडोज़र एक्शन), तो अखिलेश यादव उतनी मुखर (vocal) आवाज़ में नहीं बोलते जितनी उम्मीद की जाती है। उनका रवैया काफी डिफ़ेंसिव नज़र आता है।

* **M-Y इक्वेशन का नया रूप:** अखिलेश अब M-Y को 'मुस्लिम-यादव' के साथ-साथ 'महिला-यूथ' या PDA (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) का नया रूप देने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि पार्टी का बेस बड़ा हो।

समाजवादी पार्टी की खामियां जो मुसलमान महसूस कर रहे हैं

आज के दौर में, मुसलमान तबक़े का एक बड़ा हिस्सा समाजवादी पार्टी की कुछ खामियों से नाराज़गी और मायूसी ज़ाहिर करता है:

* **वोट की "गारंटी" समझना:** SP अक्सर यह मानकर चलती है कि मौजूदा सियासी माहौल (जहां BJP मज़बूत है) में मुसलमानों के पास SP के अलावा कोई दूसरा बड़ा ऑप्शन नहीं है। इस मजबूरी का फायदा उठा कर, पार्टी ने उनके बुनियादी मुद्दों पर ध्यान देना कम कर दिया है।

* **लीडरशिप का फुक्दान (Lack of Representation):** मुसलमान यूथ और इंटलेक्चुअल्स का गिला है कि SP ने कम्युनिटी के अंदर से ऐसी स्ट्रॉन्ग लीडरशिप डेवलप नहीं होने दी जो क़ौम के असल मसाइल (तालीम, रोज़गार, और सेफ्टी) को लेजिस्लेचर में उठा सके।

* **आइडियोलॉजिकल कॉम्प्रोमाइज़:** एक समय में SP को सेक्युलरिज्म का सबसे बड़ा पैरोकार माना जाता था। लेकिन आज मुसलमान वोटर्स को लगता है कि पार्टी पोलराइज़ेशन के डर से सेक्युलरिज्म के कोर मसलों पर खुलकर स्टैंड नहीं लेती। इस "ख़ामोशी" की वजह से कम्युनिटी खुद को सियासी तौर पर अकेला और बे-आसरा महसूस करती है।

* **तालीमी और मआशी उन्नति का ब्लूप्रिंट ना होना:** चुनावी घोषणा पत्रों (manifestos) में मुसलमानों की तालीम, स्किल्ड लेबर और बिज़नेस अपॉर्चुनिटीज़ के लिए कोई ठोस पॉलिसी या रोडमैप नज़र नहीं आता।

मौजूदा विकल्प

उत्तर प्रदेश की सियासत में मुसलमान तबक़ा अब जज़्बाती (emotional) सियासी बंधनों से निकल कर नए विकल्पों (alternatives) पर संजीदगी से ग़ौर कर रहा है। समाजवादी पार्टी से उठी मायूसी के बाद, आने वाले वक़्त में ये चार मुख्य विकल्प उनके सामने उभर कर आते हैं, जिनका तज़्जिया यहाँ किया गया है:

1. इंडियन नेशनल कांग्रेस: एक पुराना घर, नई उम्मीद

कांग्रेस किसी वक़्त UP में मुसलमानों की पहली पसंद थी। हाल के दिनों में राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' और उनके आक्रामक (aggressive) पॉलिटिकल स्टांस ने एक सकारात्मक असर छोड़ा है।

* **फायदा:** एक नेशनल पार्टी होने के नाते, कांग्रेस आइडियोलॉजिकल लेवल पर सेक्युलरिज्म के मुद्दे पर ज़्यादा मुखर (vocal) नज़र आती है। नेशनल पॉलिटिक्स में इसकी मज़बूती से माइनॉरिटी कम्युनिटी को एक उम्मीद दिखती है।

* **नुकसान:** UP में ज़मीनी सतह (ground level) पर पार्टी का कैडर और संगठन पिछले दो दशकों से काफी कमज़ोर है। इस मुद्दे पर कांग्रेस अभी भी SP पर निर्भर (dependent) लगती है।

2. बहुजन समाज पार्टी (BSP): दलित-मुस्लिम समीकरण

मायावती की BSP हमेशा से एक बड़ा पॉलिटिकल फोर्स रही है। 'दलित-मुस्लिम' इक्वेशन अगर प्रैक्टिकली ज़मीन पर उतर जाए, तो यह एक बड़ा विनिंग फार्मूला बन सकता है, जैसा 2007 के चुनावों में देखा गया था।

* **फायदा:** BSP के पास अपना एक सॉलिड कोर वोट बैंक (दलित/जाटव) है। अगर मुसलमान इसके साथ आएं, तो वोट शेयर आसानी से जीत के आंकड़े को छू सकता है।

* **नुकसान:** मायावती की हाल की सियासी ख़ामोशी और रूलिंग पार्टी के ख़िलाफ़ नरम रवैये की वजह से, मुसलमान वोटर्स उन पर पूरी तरह भरोसा करने से हिचकिचाते हैं।

3. AIMIM और नई क़यादत: खुली आवाज़ या पोलराइज़ेशन?

असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी AIMIM यूथ और पढ़े-लिखे मुसलमानों के दरमियान काफी मक़बूलियत (popularity) हासिल कर रही है। मुसलमान नौजवान अब 'ख़ामोश सियासत' के बजाय अपने हक़ के लिए ओपनली बोलने वाला नेता चाहते हैं।

* **फायदा:** बेबाक आवाज़, मुसलमानों के हक़ के लिए सीधी बात, और बिना किसी डर के क़ौमी मसाइल (एजुकेशन, वक़्फ़, सिक्योरिटी) को उठाना इसका सबसे बड़ा प्लस पॉइंट है।

* **नुकसान:** SP और कांग्रेस जैसी पार्टियां अक्सर AIMIM को "वोट-कटर" कहती हैं। साथ ही, इनका असर सिर्फ चंद मुस्लिम-मेजॉरिटी सीट्स तक महदूद रहता है और इससे रिवर्स-पोलराइज़ेशन का ख़तरा भी बना रहता है।

4. आज़ाद समाज पार्टी: नया दलित-अल्पसंख्यक गठजोड़

चंद्रशेखर आज़ाद 'रावण' की आज़ाद समाज पार्टी (कांशीराम) एक नया और अग्रेसिव पॉलिटिकल फ्रंट बन कर उभरी है, ख़ास कर नगीना लोकसभा सीट जीतने के बाद।

* **फायदा:** चंद्रशेखर ओपनली मुसलमानों, दलितों और पिछड़ों के मसलों पर सड़क पर उतरते हैं। ये डायरेक्टली उस यूथ को आकर्षित कर रहा है जो SP या BSP की पुरानी लीडरशिप से नाराज़ है।

* **नुकसान:** ये पार्टी अभी निर्माण के दौर में है और पूरे UP में इसका संगठन पूरी तरह से फैला नहीं है। एक स्टेट-वाइड फोर्स बनने में वक़्त लगेगा।

सियासी बदलाव का नतीजा:

सियासी माहिरों के मुताबिक़, UP का मुसलमान अब “ट्रांज़ैक्शनल वोटिंग” (सियासी हिस्सेदारी और विकास के बदले वोट) की तरफ बढ़ रहा है। कम्युनिटी अब अपने खुद के ज़मीनी नेता तैयार करने पर ज़ोर दे रही है ताकि किसी एक पार्टी की मोहताजी ख़त्म की जा सके।